International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2017; Page No. 112-115

समकालीन हिन्दी साहित्य में पर्यावरणीय चिंतन का अनुशीलन

[1] डॉ0 सत्येन्द्र प्रकाश, [2] राघवेन्द्र प्रकाश

[1] हिन्दी विभाग, शास. स्ना. महाविद्यालय, टीकमगढ, मध्य प्रदेश, भारत।

[2] शोधार्थी, वनस्पति शास्त्र, बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

वर्तमान में चारों ओर फैले हुए प्रदूषण को कम करनें हेतु हम कह सकते है कि प्राचीन एवं वर्तमान वैज्ञानिकों, पर्यावरणविदों के समान ही हिन्दी साहित्य की काव्य परंपरा में कवियों नें पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेवारी का निर्वहन करते हुए लगातार समाज को इस ज्वलंत समस्या के बारे में जागरूक करने का प्रयास किया है और यह अनवरत जारी है। इतनी नीतियों के पश्चात् भी प्रदूषण बढ़ता ही जा रहा है तो अब यह समाज के लोगों की व्यक्तिगत् जिम्मेवारी बनती है कि हम इन सभी चिंतको के विचारों पर चलते हुए स्वयं इस बात हेतु प्रतिबद्ध हों कि– चाहे कुछ भी हो व्यक्तिगत रूप से वे स्वयं किसी भी प्रकार का अनावश्यक प्रदूषण नहीं करें और प्रकृति के प्रति अपनी नैतिक जिम्मेवारी को समझते हुए अधिक से अधिक लोगों को पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरूक करनें का प्रयास करें। प्रकृति संरक्षण हेतु साहित्य में जो उपाय बतलाये गए हैं उनके आधार पर इसके संरक्षण के लिए कार्य करे और ऐसी स्थिति उत्पन्न करें कि–

ओ ताजी हवा / तरंगायित करो हदय मेरा/ कि वह बंधनमुक्त हो/ हिलोरें ले उछले/फिर मिल जाए समुद्र से[1]

इस प्रकृति नें हमें जीवित रहनें के लिए हर एक सुविधा तथा सहूलियत प्रदान की है तो अब आज हमारे द्वारा इसके अति दोहन के कारण ये अपने अस्वस्थ्य रूप में हमारे सामनें है। तो अब हमें इसे पूर्ण रूप से स्वस्थ्य बनानें हेतु कारगर तथा ठोस प्रयास प्रारंभ कर देने चाहिए। कवि जितेन्द्र जलज कहते हैं कि–

जब जब जो जो चाहा /जो जो मांगा/ धरती नें कभी हाथों को/ संकुचित नहीं किया,
फिर ऐसा क्यों ? कि हम/अब दे नहीं सकते धरती को/ चिरायु के लिए,
प्रदूषण मुक्त पर्यावरण ?[2]

मूल शब्दः प्रदूषण, वैज्ञानिकों, पर्यावरणविदों।

प्रस्तावना

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा जारी की गए दस्तावेज के आधार पर हमें वर्तमान के कुछ वैश्विक आंकड़ों पर विचार करना अति आवश्यक हो गया है, जिसमें बताया गया है कि आज विश्व में लगभग 80 प्रतिशत शहरी तथा कुल आबादी में 98 प्रतिशत लोगों को सांस लेनें हेतु शुद्ध वायु नहीं बची है। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा जारी रिपोर्ट में प्रमुख 20 प्रदूषित शहरों मे से 13 भारत के हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के आधार पर प्रतिवर्ष भारत में लगभग 14 लाख लोगों की मृत्यु हो रही है। (विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार) यह नुकसान केवल स्वास्थ्य के स्तर पर ही नहीं है बल्कि इससे भारतीय अर्थव्यवस्था में भी प्रतिवर्ष 37 लाख करोड़ का आर्थिक नुकसान हो रहा है। जो कुल भारतीय GDP का लगभग 8 प्रतिशत है। आज भारत की सभी बड़ी नदियां प्रदूषण के कारण उपयोगहीन होती जा रही है। विश्व की प्रमुख शीर्ष प्रदूषित 5 नदियों में से 3 भारतीय नदियां है। भारत की प्रमुख नदियां अब जैव ऑक्सीजन माँग के आधार पर अत्यंत प्रदूषित हो गई है। इसका अर्थ यह है कि भारतीय नदियों में रहनें वाले जीव–जंतुओं तथा पौधों को आवश्यक ऑक्सीजन में कमी हो गई है जिसके कारण उनकी मृत्यू दर में वृद्धि, प्रजनन क्षमता में कमी तथा स्थायी शारीरिक विकृतियां उत्पन्न हो गई हैं। पहाड़ों–पर्वतों को भू–माफियाओं द्वारा स्वार्थवश खोद कर समतल कर दिया गया है। अधिकांश जंगल काटे जा चुके हैं, और जो कुछ भी बचे है वह भी प्रतिबंधों के बावजूद लगातार काटे जा रहे है। विभिन्न कारणों से वन्य जीवों को मारा जा रहा है इससे कई प्रजातियां तो खत्म हो चुकी हैं और कई समाप्ति की ओर अग्रसर हैं। इन समस्त कारणों से खाद्य श्रंखला तथा खाद्य जाल पूर्ण रूप से विकृत हो गए हैं। आज हरित गृह प्रभाव तथा प्रदूषण के कारण कार्बन डाई ऑक्साइड की मात्रा वायुमंडल में बढ़ जानें के कारण वैश्विक ताप में वृद्धि हो रही है, ध्रुवीय बर्फ पिघलकर महासागरों का जलस्तर बढ़ा रही है। प्रदूषण के स्तर में वृद्धि का एक स्वरूप ग्राफीय निरूपण द्वारा दृष्टव्य है।

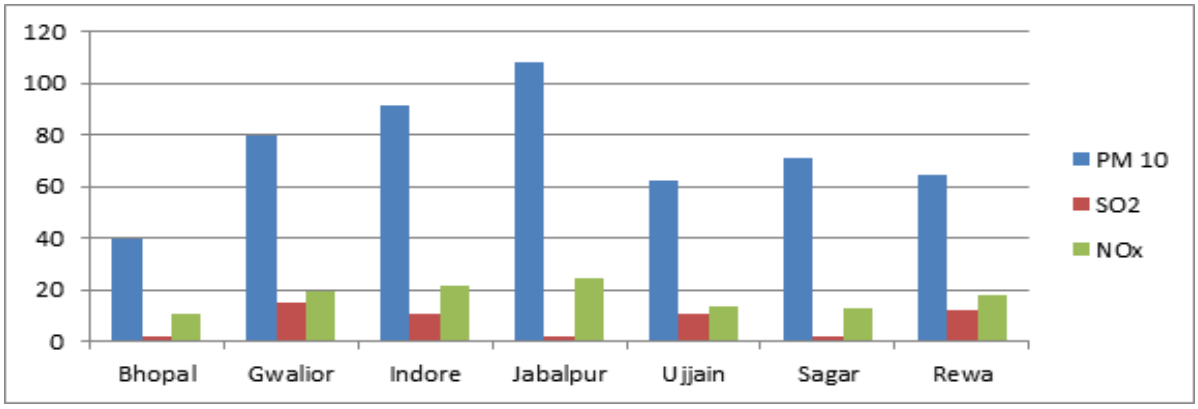

आकृति 1: दीपावली के पूर्व मध्य प्रदेश का प्रदूषण स्तर 2016

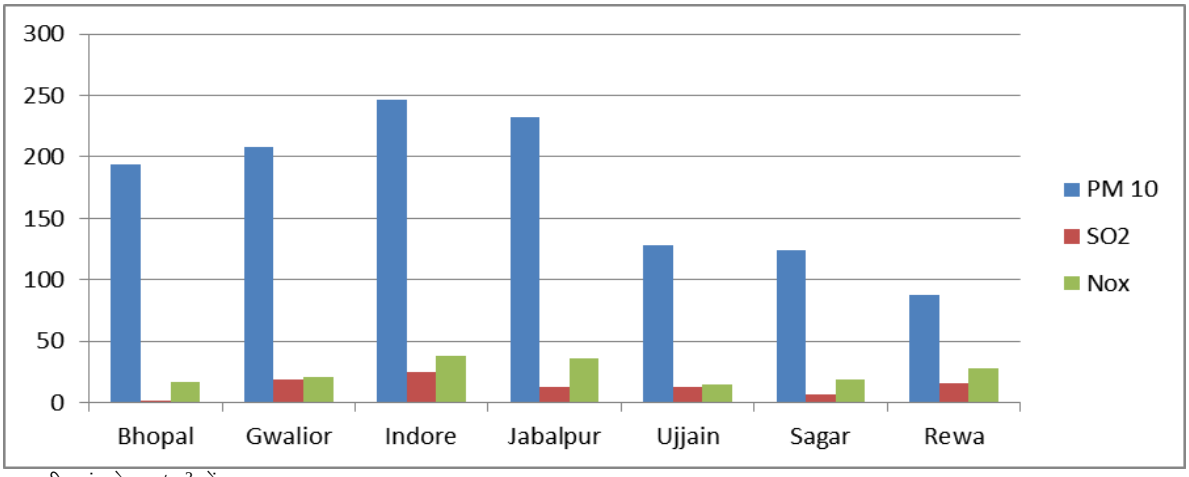

सभी आंकड़े $\mu g/m^3$ में

आकृति 2: दीपावली के पश्चात् मध्य प्रदेश का प्रदूषण स्तर 2016

ज्ञान से भरे हुए वेद, पुराण, उपनिषदों, संतों, विचारकों , साहित्यकारों तथा उच्च मार्गदर्शकों के इस देश में ऐसा क्या हो गया कि आज भारत की गणना विश्व के सबसे प्रदूषित देशों मे हो रही है ? ऐसा नहीं है कि शासकीय स्तर पर प्रयास नहीं किये जा रहे है। प्रकृति संरक्षण हेतु कई अंतराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय नियम बनाऐ गए हैं इसके बावजूद भी जल, वायु, आकाश, अंतरिक्ष, प्रकृति आदि लगातार प्रदूषित हो रहे हैं, तो प्रश्न यह उठता है कि कमी कहां है? इसका सबसे बड़ा कारण है कि हमनें अपने पूर्वजों की बातो, उनके द्वारा प्रदत्त ज्ञान को पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण में भुला दिया गया है। हम उस पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण कर रहे है जो हमारी संस्कृति से ही पोषित तथा प्रभावित है। हमारे वेद–पुराणों के ज्ञान–विज्ञान का प्रयोग करके नित नए आविष्कार कर रहे हैं। परमाणु बम मे जनक ओपेनहाइमर स्वयं मानते थे कि इस प्रकार के विस्फोटक सामग्री की खोज का मुख्य स्त्रोत महाभारत में ब्रम्हास्त्र का प्रयोग किया जाना है। मैं यहां भारतीय ज्ञान–विज्ञान का विस्तृत स्वरूप प्रस्तुत नहीं करना चाहता बल्कि यह बतानें का प्रयास कर रहा हूँ कि भारतीय ज्ञान कितना प्रासांगिक एवं प्रभावी है, जिससे ज्ञान प्राप्त कर विश्व के अधिकतम् आविष्कार किये जा रहे हैं। । हम अपने इसी ज्ञान को आज विस्मृत करनें की जो भूल कर चुके है– उसी का परिणाम है कि आज संपूर्ण भारत ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व का पर्यावरण प्रदूषित हो चुका है।

प्रारंभ से ही हमारे वेदों में प्रकृति के संयमित दोहन तथा इसके संरक्षण के बारे में विस्तार से कहा गया था। हमारे वैदिक काल के चिंतक, विद्वान और रचनाकार प्रकृति की महत्ता को अच्छे से समझते थे। इसी कारण वेदों में कहा गया है कि –

पूर्णभदः पूर्णामिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।

महर्षि यास्क के अनुसार – ''कोई वस्तु तभी तक अपनी सत्ता बनाए रख सकती है जब तक वह स्वयं को धारण करनें में समर्थ हो। जब उसमें बाहरी हस्तक्षेप अधिक होता है अथवा उसकी नैसर्गिक संरचना विकृत होती है तो उसकी आत्मधारणा शक्ति नष्ट हो जाती है, यही उसका प्रदूषण है। वस्तु के निर्माण का जो अनुपात है, वह स्थिर रहना चाहिए। अनुपात भंग हुआ और वस्तु का स्वास्थ्य नष्ट हो गया। वस्तु के साथ स्वास्थ्य का विनष्ट होना ही प्रदूषण है।'' वहीं वायुपुराण में महर्षि वेदव्यास नें कहा है कि ''इस सृष्टि के अपनें स्वरूप में अधिष्ठित हो जानें पर इसका अंधाधुध दोहन न किया जाए, क्योंकि मनुष्यों के क्रियाकलापों तथा अतिशय भोगवादिता के कारण प्राकृतिक पदार्थो में समय पूर्व वे दोष उत्पन्न हो जाते है, जो कल्प के अंत में आनें वाली प्रलय का कारण बनते हैं।'' इसी तारतम्य में वर्तमान काव्य भी पर्यावरण के प्रति अपना चिंतन व्यक्त करने में उदासीन नहीं है तथा वर्तमान साहित्यकार निरंतर ही पर्यावरण के प्रति लोक जागरण के कार्य में लगे हुए हैं। रूपेश कन्नौजिया प्रकृति की आवश्यकता और सुंदरता का वर्णन करते हुए प्रकृति की तुलना मां से की है। वे कहते हैं कि

प्रकृति तो हमेशा ही मेरी सुंदर मां जैसी है

गुलाबी सुबह से माथा चूमकर हंसते हुए उठाती है
गर्म दोपहर में उर्जा भर के दिन खुशहाल बनाती है
रात की चादर में सितारे जड़ कर मीठी नींद सुलाती है
प्रकृति तो हमेशा ही मेरी सुंदर मां जैसी है

श्रीप्रकाश मिश्र ने अपनें साहित्य में लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करनें का अथक प्रयास किया है। उन्होंने प्रदूषण के कारण हुए प्रकृति के विनाश का वर्णन बड़े ही मार्मिक शब्दों में किया। वे कहते हैं कि –

जला हुआ आकाश / जली हुई धरती / जला हुआ जल / मेरे चारों ओर/ और कहीं राख नहीं [3]

प्राणवायु उत्पन्न करने तथा प्रकृति में ताप नियमन करने वाले वृक्षों तथा वनों को काटकर उनके स्थान पर बड़े–बड़े कारखानें बनाकर प्रदूषण करनें पर उन्होंने कुठाराघात किया है और इस प्रकार प्रकृति का अतिदोहन कर औद्योगीकरण से हुए विकास को भी वे गलत मानते है। कविता वाचक्नवी कहतीं है कि–

उखाड़ कर प्राणवाही पेड़–पौधे / बो दिए धुंआं उगलते कल–कारखाने [4]

नदियों पर बांध किसी भी देश के विकास की रीढ़ माना जाता है परन्तु जब इससे पारिस्थितिक तंत्र प्रभावित हो और पर्यावरण प्रदूषित होने लगे तो यह अत्यंत विनाशकारी स्वरूप धारण कर सकते है। इससे जीव–जंतुओं तथा पेड़–पौधों का प्राकृतिक आवास प्रभावित होता है। इसके लिए भी कविता वाचक्नवी नें कहा है कि–

जलवाही धाराओं को बांध दिया/तुम्हारी कुदालों, खुरपियों, फावड़ों, /मशीनों, आरियों, बुलडोजरों से [5]

वर्तमान समय में अब तकनीकि बदल रही है। आज अधिकतम् कार्य जैसे उर्जा उत्पादन, विद्युत उत्पादन, आयुध निर्माण आदि नाभिकीय विखंडन एवं नाभिकीय संलयन जैसी विधियों से किये जा रहे हैं इनसे अत्यधिक मात्रा में रेडियोएक्टिव विकिरण उत्सर्जित होता है और यह पर्यावरण को प्रदूषित करता है। ऋषभ देव शर्मा इसके विरूद्ध अपनी चिंता व्यक्त करते हुए कहते हैं कि –

हैलो, मनुष्य/मै आकाश हूं/कल तक रस था, आनंद था/ आज घुटन हूं संत्रास हूं/रस का जो स्त्रोत था जिससे धरा थी रसवन्ती /उसमें तो घोल दिया तुमने/रेडियम और यूरेनियम/जिस औंधे कुएं में से फूट पड़ता था/आनंद का पातालतोड़ फव्वारा/काट डाला तुमने उसकी जड़ों को रेडियोधर्मी विकिरणो के फावड़ों और नाभिकीया उर्जा की पलकटी स [6]

वनों के नष्ट होनें के कारण वैश्विक ताप में वृद्धि हो रही है इसके दुष्परिणामों के विषय में लोगो का ध्यान आकर्षित करनें हेतु कवि कहते हैं कि –

सिर पर सम्मुख/जलता सूरज/भभक रहा है/लपटों में घिर देह बचाती पृथ्वी का हरियाला आंचल/झुलस गया है [7]
न जाने क्यों नाराज हुए इंद्र देव/इतना पानी बरसा दिन–रात/ मचलती नदियां उफन पड़ी पानी–पानी हुई आधी धरती/ कांप उठे सब अंदर से [8]

वातावरण में लोगो द्वारा अत्यधिक रासायनिक कचरा, ई–कचरा, कूड़ा–कचरा और पॉलीथीन जैसे कचरे को लगातार फैलाया जा रहा है। इससे कई प्रकार की विषैली गैसे, विषैले रसायन और कुछ कचरा सीधे ही मृदा और वायु में मिलकर इनको प्रदूषित कर रहे है, जिससे मृदा अपनी उर्वरता खो रही है।

महानगरीय कचरे में/पंचमहाभतों के ऐसे–ऐसे सम्मिश्रण/नए सभ्य उत्पाद–रासायनिकऔर पॉलिथीन/धरती पचा नहीं पाई/ इस बार [9]
धरा का धरा रह जाता है सारा पौरोहित्य / उपर वाले का भी / धुएं और धुंध की तामीर कांपती है/चेतावनी दे रही हो जैसे[10]

इसके साथ साथ काव्य में कोयल के माध्यम से विश्व के समस्त जीव–जंतुओं के प्राकृतिक आवास के नष्ट होनें की समस्या को भी कवि के माध्यम से उठाया गया है। आज जंगलों, वृक्षों के नष्ट हो जाने से कई जीव जंतु विलुप्त हो गए हैं और जो शेष बचे हुए है उनका भविष्य भी कोई उज्ज्वल दिखाई नहीं देता। अतः कवि दीपक कुमार कहते हैं कि–

पास के गांव खेड़े से भटकी एक कोयल / कूक रही है भरी दुपहरिया में / कंक्रीट की अमरैया में[11]
कहां बची है छांव/जो इत्तीनान से तू ले सके आलाप [12] कोई तो अमराई बची होगी कहीं पर/शहर के बनने की यह रफतार है री/जिस तेजी से कटते हैं दरख्त/उससे तेज बनते हैं मकान कम्बख्त/इनकी नींवों में दफन हैं/मीलों–मील हरी घास के मैदान, गांव/उन्हें सींचते थे जो रपटे–नाले, कुएं–तलाब/ग्राम देवता बचा नहीं पाए/अपनें बरगद, पीपल, सरई, खम्हार और/अमराइयों पर लदे बौर/मेरी तरह तू भी ढूंढ़ अब दूजा ठौर[13]

प्रदूषित होती नदियों, उनकी सफाई तथा रखरखाव पर सरकारी नीतियों के कियान्वयन की प्रक्रिया पर भी कवि प्रश्न उठाते हैं और कहते हैं कि–

नदियां कल भी बहती थीं / बहती हैं आज भी / अवरोधों से / हमेशा जूझती नदियां[14]
वे कल भी पाषाण थे/आज भी पाषाण हैं/व्यवस्था के नाम पर / उलटी बहाते नदियां/ पर्वतों के उस पार खंजरों की धार पर हैं नदियां/वे पोखरों को/बताते हैं नदियां[15]

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. ओ ताजी हवा, सारदा बैनर्जी, वागर्थ, अक्टूबर 2016, पृष्ठ 37।
2. ऐसा क्यों, जितेन्द्र जलज, वागर्थ, अक्टूबर 2016, पृष्ठ 82।
3. सब कुछ जला हुआ, श्रीप्रकाश मिश्र, वागर्थ, मई 2016 पृष्ठ 60।
4. भूकंप, कविता वाचक्नवी, मैं चल तो दूं, पृष्ठ 119।
5. भूकंप, कविता वाचक्नवी, मैं चल तो दूं, पृष्ठ 119।
6. मै आकाश बोल रहा हूँ, ऋषभ देव शर्मा, ताकि सनद रहे पृ 57।
7. धरती, कविता वाचक्नवी, मै चल तो दूं, पृ 139।
8. राहत शिविर, अजय प्रसाद, वागर्थ, अक्टूबर 2016, पृष्ठ 81।
9. कूड़ा कचरा और कोंपलें, बलदेव वंशी, समकालीन भारतीय साहित्य, जुलाई अगस्त 2008, पृ 147।
10. समुद्र : तीन चित्र, सौम्य मालवीय, वागर्थ, अगस्त 2016, पृष्ठ 73।

11. कंक्रीट की अमरैया में कोयल की कूक, दीपक कुमार पाचपोर, वागर्थ मार्च 2016, पृष्ठ 70।
12. कंक्रीट की अमरैया में कोयल की कूक दीपक कुमार पाचपोर वागर्थ मार्च 2016, पृष्ठ 70।
13. कंक्रीट की अमरैया में कोयल की कूक दीपक कुमार पाचपोर वागर्थ मार्च 2016, पृष्ठ 70।
14. नदियां, बुद्धिलाल पाल, वागर्थ अगस्त 16, पृष्ठ 71।
15. नदियां, बुद्धिलाल पाल, वागर्थ अगस्त 16, पृष्ठ 71।
16. वेदों में पर्यावरण एवं जल संरक्षण, डॉ पुनीत बिसारिया, शोध पत्र।
17. आज की हिन्दी कविता में पर्यावरण, गुर्रमकोंड़ा नीरजा, शोध पत्र।